Bayta ho to Aisa

बेटा हो तो ऐसा

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

(مسند ابی یعلی، ج۳، ص۹۵، حدیث ۲۹۵۱ دار الکتب العلمیہ بیروت)

अगर्चे हैं बेह़द क़ुसूर तुम हो अ़फ़ुव्वो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़त़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की नियतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब और बर गुज़ीदा नबी हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को ख़ुसूसी इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा है, येही वज्ह थी कि आप पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जितनी भी आज़माइशें आईं, आप उन में तौफ़ीक़े इलाही से साबित क़दम रहे, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का एक मश्हूरो मा'रूफ़ वाक़िआ़ और फिर इस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल भी सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीनों रात एक त़रह़ का ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ज़ुल ह़ज की आंठवीं रात एक ख़्वाब देखा, जिस में कोई कहने वाला कह रहा है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने बेटे को ज़ब्ह़ करने का हुक्म देता है ।" आप सुब्ह़ से शाम तक इस बारे में ग़ौर फ़रमाते रहे कि येह ख़्वाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है या शैत़ान की जानिब से ? इसी लिये आठ[8] ज़ुल ह़ज का नाम यौमुत्तरविया (या'नी सोच बिचार का दिन) रखा गया । नवीं रात फिर वोही ख़्वाब देखा और सुब्ह़ यक़ीन कर लिया कि येह हुक्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, इसी लिये 9 ज़ुल ह़ज को यौमे अ़रफ़ा (या'नी पहचानने का दिन) कहा जाता है । दसवीं रात फिर वोही ख़्वाब देखने के बा'द आप ने सुब्ह़ इस ख़्वाब पर अ़मल करते हुवे बेटे की क़ुरबानी का पक्का इरादा फ़रमा लिया, जिस की वज्ह से 10 ज़ुल ह़ज को यौमुन्नह़र या'नी "ज़ब्ह़ का दिन" कहा जाता है । (تفسیر کبیر، ۹/۳۴۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुक्मे ख़ुदावन्दी की तक्मील का अनोखा अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का मक़ामो मर्तबा जमीअ़ मख़्लूक़ में अरफ़अ़ व आ'ला है, लिहाज़ा उन पर आने वाले

www.dawateislami.net

इम्तिहानात भी इसी क़दर शदीद होते हैं, मगर क़ुरबान जाइये, उन मुक़द्दस हस्तियों के सब्रो इस्तिक़लाल पर कि वोह इस राह में आने वाले मसाइबो आलाम को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त कर के न सिर्फ़ बारगाहे इलाही में सुर्ख़ रू हो कर बुलन्द दरजात ह़ासिल करते हैं बल्कि मुस्तक़्बिल में आने वाले इम्तिह़ानात के लिये अपने आप को और घर वालों को भी हमा वक़्त तय्यार रखते हैं, उन की येही अ़ज़ीम क़ुरबानियां रहती दुन्या तक के लोगों के लिये मशअ़ले राह बन जाती हैं। चूंकि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के ख़्वाब वह़ी होते हैं। (مستدرک،تفسیر سورۃ الصافات،۳/۲۱۴، حدیث:۳۶۶۵) लिहाज़ा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام समझ गए कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने बेटे को ज़ब्ह़ करने का हुक्म इरशाद फ़रमा रहा है। फ़ौरन अपने लख़्ते जिगर को फ़रमाने ख़ुदावन्दी पर क़ुरबान करने के लिये तय्यार हो गए और आप ने येह सारा माजरा अपने नौ ख़ैज़ (कम उ़म्र) बेटे ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को भी बता दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है कि मैं तुम्हें ज़ब्ह़ करूं, अब तुम बताओ तुम्हारी क्या राए है ? तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इस लिये मश्वरा नहीं मांगा था कि अगर उन की मरज़ी न हो तो उन की राए पर अ़मल करें बल्कि इस से ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام का इम्तिह़ान मक़्सूद था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाली आज़माइश पर उन के क्या जज़्बात हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की इत़ाअ़त और उस की त़रफ़ से मिलने वाली मशक़्क़त पर उन के सब्र और साबित क़दमी का इ़ल्म हो जाए और वोह हुक्मे ख़ुदावन्दी की बजा आवरी पर मिलने वाले सवाब को पाने में भी कामयाब हो सकें। (تفسیر خازن۴/۲۲،ملخصاً) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से जब येह ख़्वाब बयान फ़रमाया तो उस पैकरे तस्लीमो रिज़ा ने जो जवाब दिया उसे क़ुरआने पाक में पारह 23 सूरतुस्साफ़्फ़ात की आयत नम्बर 102 में इन लफ़्ज़ों में बयान किया है :

www.dawateislami.net

قَالَ يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कहा ऐ मेरे बाप ! कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है, ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे ।*

मुझे रस्सियों से मज़बूत बांध दीजिये

तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : अब्बूजान ! ज़ब्ह़ करने से पहले मुझे रस्सियों से मज़बूत़ बांध दीजिये ताकि मैं हिल न सकूं, क्यूंकि मुझे डर है कि कहीं मेरे सवाब में कमी न हो जाए और मेरे ख़ून के छींटों से अपने कपड़े बचा कर रखिये ताकि उन्हें देख कर मेरी अम्मीजान ग़मगीन न हों । छुरी ख़ूब तेज़ कर लीजिये ताकि मेरे गले पर अच्छी त़रह़ चल जाए (या'नी गला फ़ौरन कट जाए) क्यूंकि मौत बहुत सख़्त होती है, आप मुझे ज़ब्ह़ करने के लिये पेशानी के बल लिटाइये (या'नी चेहरा ज़मीन की त़रफ़ हो) ताकि आप की नज़र मेरे चेहरे पर न पड़े और जब आप मेरी अम्मीजान के पास जाएं तो उन्हें मेरा सलाम पहुंचा दीजिये और अगर आप मुनासिब समझें तो मेरी क़मीस उन्हें दे दीजिये, इस से उन को तसल्ली होगी और सब्र आ जाएगा । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर अ़मल करने में मेरे कैसे उ़म्दा मददगार साबित हो रहे हो ! फिर जिस त़रह़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा था, उन को उसी त़रह़ बांध दिया, अपनी छुरी तेज़ की, ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को पेशानी के बल लिटा दिया, उन के चेहरे से नज़र हटा ली और उन के गले पर छुरी चला दी, लेकिन छुरी ने अपना काम न किया या'नी गला न काटा । (تفسیر خازن، ۴/۲۲)

जन्नती मेंढा और मुबारक कलिमात का मजमूआ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ब्ह़ करने के लिये ज़मीन पर लिटाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام बत़ौरे फ़िदया जन्नत से एक मेंढा (या'नी दुम्बा) लिये तशरीफ़ लाए और दूर से ऊंची आवाज़ में फ़रमाया : اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

www.dawateislami.net

जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने येह आवाज़ सुनी तो अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया और जान गए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाली आज़माइश का वक़्त गुज़र चुका है और बेटे की जगह फ़िदये में मेंढा भेजा गया है, लिहाज़ा ख़ुश हो कर फ़रमाया لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر जब ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने येह सुना तो फ़रमाया اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْد इस के बा'द से इन तीनों पाक ह़ज़रात के इन मुबारक अल्फ़ाज़ की अदाएगी की येह सुन्नत क़ियामत तक के लिये जारी व सारी हो गई। (بنایہ شرح ہدایہ ج۳ص:۱۳۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में हमारे लिये भी मदनी फूल मौजूद हैं जैसा कि आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़्वाब बताया तो आप बजाए ग़मगीन और ख़ौफ़ज़दा होने के फ़रह़त व मसर्रत से गोया झूमने लगे कि मेरी ख़ुश क़िस्मती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी क़ुरबानी को त़लब फ़रमाया है और ब ख़ुशी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़ुरबान होने के लिये तय्यार हो गए, इस के बर अ़क्स अगर किसी पर ज़रा सी आज़माइश आ जाए या कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो वोह शिक्वा शिकायात बल्कि **مَعَاذَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ बे सब्री का मुज़ाहरा करते हुवे बसा अवक़ात कुफ़्रिय्यात तक बक जाता है और रब तआ़ला की नाराज़ी मोल लेता है, ऐसे मौक़अ़ पर ख़ूब सब्र का मुज़ाहरा करना चाहिये कि येह आज़माइश भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मत है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक ज़ियादा अज्र सख़्त आज़माइश पर ही है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी क़ौम से मह़ब्बत करता है तो उन्हें आज़माइश में मुब्तला कर देता है, तो जो उस की क़ज़ा पर राज़ी हो उस के लिये रिज़ा है और जो नाराज़ हो उस के लिये नाराज़ी है।" (ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب الصبر علی البلاء، رقم ۴۰۳۱، ج۴، ص ۳۷۴) इस वाक़िए़ से तर्बिय्यते अवलाद का भी दर्स मिलता है कि हमारे बच्चे अगर्चे हमारे दिल का चैन और आंखों का नूर सही लेकिन इस से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे, नबिय्ये

www.dawateislami.net

करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मती और इस्लामी मुआ़शरे के अहम फ़र्द भी हैं । अगर हमारी तर्बिय्यत उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और सुन्नतों से मह़ब्बत और गुनाहों से नफ़रत नहीं दिला सकी तो उन्हें अपना फ़रमां बरदार बनाने का ख़्वाब देखना भी छोड़ देना चाहिये, क्यूंकि येह इस्लाम ही है जो एक मुसलमान को अपने वालिदैन का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बनने की ता'लीम देता है । इस लिये हमें अवलाद की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत, अच्छी ग़िज़ा, अच्छा लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात के साथ साथ उन की अख़्लाक़ी व रूह़ानी तर्बिय्यत के लिये भी हर दम कमरबस्ता रहना चाहिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शहरे मक्कतुल मुकर्रमा की आबाद कारी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब आप (ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल) की वालिदा ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا और आप عَلَيْهِ السَّلَام को शहरे मक्का में लाए और उन्हें वहां छोड़ दिया, इस दौरान एक त़वील अ़र्सा वहां गुज़र गया और मक्कए मुकर्रमा में ही क़बीलए जुरहम ने पड़ाव डाला और वोह भी वहां रहने लगे । (इसी अ़र्से में ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام भी जवान हो चुके थे) ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन की एक औ़रत से शादी कर ली और उन की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का इस अ़र्से में विसाल हो गया । एक मुद्दत गुज़रने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के घर तशरीफ़ लाए और उन की ज़ौजा से पूछा : आप के साह़िब (शोहर) कहां हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : वोह शिकार के लिये तशरीफ़ ले गए हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! आप तशरीफ़ रखें, वोह اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ अभी आते ही होंगे । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने पूछा : तुम्हारे पास कुछ खाने को है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ! इस के साथ ही दूध और गोश्त ह़ाज़िरे ख़िदमत किया । ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन से उन की गुज़र बसर के बारे में पूछा, तो ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : हम ब ख़ैर हैं और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुश ह़ाल भी हैं। तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन दोनों के लिये दुआ़ए बरकत की फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन से कहा कि जब तुम्हारे साह़िब (शोहर) आएं तो उन्हें मेरा सलाम देना, और कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट को बाक़ी रखें। जब ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम की ख़ुश्बू महसूस की तो अपनी ज़ौजा से पूछा : "क्या आज यहां कोई आया था।" उन्हों ने जवाब दिया : "हां एक ख़ूब सूरत चेहरे वाले और अच्छी ख़ुश्बू वाले बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए थे, इस के बा'द उन्हों ने तमाम माजरा सुनाया। और येह भी कहा कि मैं ने उन का सरे अक़्दस धोया था और येह उन के क़दमों के निशान हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام ने तमाम वाक़िआ़ सुन कर इरशाद फ़रमाया : "वोह मेरे वालिद ह़ज़रते इब्राहीम थे और मेरे दरवाज़े की चौखट से मुराद तुम हो और उन्हों ने मुझे ह़ुक्म दिया है कि मैं तुम्हें रोके रखूं।" (روح البیان، ۱/۲۲۵ملتقطاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से येह दर्स मिलता है कि जब कोई मेहमान आए तो हमें अपनी हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ उस की मेहमान नवाज़ी करनी चाहिये और अपनी ग़ुर्बत व तंगदस्ती का इज़्हार करने के बजाए हर ह़ाल में शुक्रे इलाही अदा करना चाहिये। और अपनी बहनों, बेटियों और अपने बच्चों की अम्मी की तर्बिय्यत करते हुवे उन्हें शोहर के ह़ुक़ूक़ की अदाएगी और उस की शुक्र गुज़ार बीवी बनने और नाशुक्री और एह़सान फ़रामोशी से बचने का दर्स देना चाहिये। यक़ीनन नेक सीरत और मिसाली बीवी की एक ख़ूबी येह है कि वोह हमेशा अपने शोहर की ने'मतों की शुक्र गुज़ार रहती है और कभी उस के एह़सानात का इन्कार कर के नाशुक्री नहीं करती वोह अच्छी त़रह़ जानती है कि शोहर मुझ जैसी सिन्फ़े नाज़ुक के लिये एक मज़बूत़ सहारा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है, वोही मेरी ज़रूरतों को

www.dawateislami.net

पूरा करता है और उस की वज्ह से मुझे अवलाद की ने'मत मिली है। मगर बद क़िस्मती से हमारे मुआ़शरे में कई इस्लामी बहनें नाशुक्री की बला में गिरिफ़्तार हैं, ज़रा किसी का अच्छा घर, क़ीमती कपड़े और बेश क़ीमत ज़ेवरात देखें तो नाशुक्री पर उतर आती हैं और مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** तआ़ला पर ए'तिराज़ करते हुवे कुछ इस क़िस्म की गुफ़्तगू करती हैं कि "खुदा ने हमें ना मा'लूम किस जुर्म की सज़ा में मुफ़्लिस और ग़रीब बना दिया। मैं तो हूं ही बद क़िस्मत कि न मैके में सुख नसीब हुवा न सुसराल में ही कुछ देखा। फ़ुलां को देखो ऐशो आराम में ज़िन्दगी बसर कर रही है और मैं यहां फ़ाक़ों से मर रही हूं, वग़ैरा वग़ैरा।" इसी त़रह़ बा'ज़ की येह आ़दत होती है कि उन्हें अच्छा और उ़म्दा खिलाते पिलाते रहें नीज़ अपनी ह़ैसिय्यत और त़ाक़त के मुत़ाबिक़ कपड़े, ज़ेवरात और दीगर साज़ो सामान देते रहते हैं लेकिन अगर कभी किसी मजबूरी से कोई ख़्वाहिश पूरी न कर सकें तो वोह शोहर के ज़िन्दगी भर के एह़सानात को भुला कर उस की नाशुक्री करते हुवे कहती हैं कि "हाए मुझे इस घर में कभी सुख नसीब नहीं हुवा। तुम ने मेरी कभी कोई ख़्वाहिश पूरी की ही नहीं। मेरी तो क़िस्मत ही फूटी है जो तुम जैसे शख़्स से बियाही गई वग़ैरा वग़ैरा" (जन्नती ज़ेवर, स. 125 मुलख़्ख़सन) याद रहे कि नाशुक्री के येह अल्फ़ाज़ न सिर्फ़ औ़रत की दुन्यावी ज़िन्दगी को उजाड़ देते हैं बल्कि उस की आख़िरत भी बरबाद कर सकते हैं। चुनान्चे,

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मैं ने जहन्नम में अकसरिय्यत औ़रतों की देखी। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस की क्या वज्ह है ? फ़रमाया : क्यूंकि वोह ना शुक्री करती हैं। पूछा गया कि क्या वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना शुक्री करती हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह शोहर और उस के एह़सान की ना शुक्री करती हैं। चुनान्चे, तुम किसी औ़रत के साथ उ़म्र भर अच्छा सुलूक करो लेकिन कभी तुम में कोई नापसन्दीदा बात देखेगी तो कहेगी : मैं ने तुम से कभी भलाई देखी ही नहीं।

(بخاری، کتاب النکاح، باب کفران العشیر...الخ، ۳/۴۶۳، حدیث:۵۱۹۷)

www.dawateislami.net

और जो इस्लामी बहनें अ़क़्लमन्दी का सुबूत देते हुवे अपने शोहर की फ़रमां बरदार और शुक्र गुज़ार बीवी बनने का किरदार निभाती हैं, उन के लिये जन्नत की बिशारत है, चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो औ़रत पांचों नमाज़ें पढ़े, रमज़ान के रोज़े रखे, अपनी इ़ज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त करे और अपने शोहर की इत़ाअ़त करे तो उस से कहा जाएगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहो जन्नत में दाख़िल हो जाओ।"

(مسند امام احمد، مسند عبد الرحمن بن عوف، ۱/ ۴۰۶، حدیث: ۱۶۶۱)

याद रखिये ! शोहर की नाशुक्री से औ़रत को इस लिये भी बचना चाहिये कि मुसलसल इस क़िस्म की बातें शोहर के दिल में नफ़रत व अ़दावत का तूफ़ान बर्पा कर देती हैं और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता उस की ज़द में आ कर तअ़ल्लुक़ात की किश्ती डूब गई तो उ़म्र भर पछताने के सिवा कुछ हाथ न आएगा। बहर ह़ाल कामयाब बीवी वोही है जो कभी भी ना शुक्री के अल्फ़ाज़ ज़बान पर न लाए और हमेशा शोहर की शुक्र गुज़ार बन कर उस का दिल ख़ुश करती रहे। मियां बीवी के दरमियान बाहमी मह़ब्बत व उल्फ़त का येह ख़ूब सूरत रिश्ता ख़ुश उसलूबी से उसी वक़्त चल सकता है जब वोह दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ अच्छी त़रह़ से अदा करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की सिफ़ात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार ख़ूबियों से नवाज़ा और क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर आप का ज़िक्र हुवा, आप मे'मारे का'बा (का'बए मुअ़ज़्ज़मा ता'मीर करने वाले) और बानिये मक्कतुल मुकर्रमा हैं। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जद्दुल अ़रब (अहले अ़रब के दादा) और आप अबुल अ़रब (अहले अ़रब के वालिद) हैं। आबे ज़मज़म आप का मो'जिज़ए इरहासी (ए'लाने नबुव्वत से पहले सादिर होने वाला मो'जिज़ा) है जो ता क़ियामत बाक़ी है क़ियामत तक दो[2] ही मो'जिज़े बाक़ी रहने वाले हैं, एक आबे ज़मज़म का चश्मा जो इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की ऐड़ी से निकला और दूसरा दीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी क़ुरआने करीम, ह़दीसे पाक और इन के क़वानीन व इ़बादात (तफ़्सीरे नईमी, 16/285)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की यादगार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आबे ज़मज़म शरीफ़ जो क़ियामत तक बाक़ी रहने वाला मो'जिज़ा है, इसे हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत की वज्ह से दुन्या के तमाम पानियों पर कई ए'तिबार से अफ़्ज़लिय्यत व फ़ौक़िय्यत हासिल है । कई साल गुज़र जाने के बा वुजूद येह पानी मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़याब कर रहा है और ज़ाहिरी व बातिनी अमराज़ से शिफ़ा की दौलत भी तक़्सीम कर रहा है । मेरे आक़ा आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : ज़मज़म शरीफ़ का एक मो'जिज़ा येह भी है कि हर वक़्त मज़ा बदलता रहता है । किसी वक़्त कुछ खारापन, किसी वक़्त निहायत शीरीं और रात के दो[2] बजे अगर पिया जाए तो ताज़ा दोहा हुवा गाए का ख़ालिस दूध मा'लूम होता है । (मज़ीद फ़रमाते हैं :) ज़मज़म शरीफ़ जिस के पास काफ़ी मिक़्दार से हो उसे न किसी ग़िज़ा की ज़रूरत, न दवा की । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 435) हदीस शरीफ़ में है : ज़मज़म खाने की जगह खाना और दवा की जगह दवा है ।

(مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الحج، باب فی فضل زمزم، ۴/۳۵۸، حدیث: ۲)

आइये अब हम आबे ज़मज़म के फ़ज़ाइल पर तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं : चुनान्चे,

1. आबे ज़मज़म दुन्या व आख़िरत के जिस मक़्सद के लिये भी पिया जाए काफ़ी है ।

(سنن ابن ماجۃ، ابواب المناسک، باب الشرف من زمزم، ج ۳، ص ۴۹۰، حدیث: ۳۰۶۲، بدون ''من امر الدنیا والآخرۃ'')

2. आबे ज़म ज़म पेट भर कर पीना निफ़ाक़ से छुटकारा देता है ।

(فردوس الأخبار، باب التاء، حدیث: ۲۲۵۵، ۱/۳۰۹)

3. आबे ज़मज़म सत्हे ज़मीन पर मौजूद हर पानी से बेहतर है ।

(معجم الکبیر، حدیث: ۱۱۱۶۷، ۱۱/۸۰)

आबे ज़मज़म शिफ़ाउल्लाह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इस मुक़द्दस पानी को किस क़दर शानो शौकत और बरकतों से नवाज़ा है कि जहां येह मुसलमानों के दिलों में ता क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

www.dawateislami.net

नबी ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की याद और इन की महब्बत ताज़ा करता रहेगा, वहीं येह बा बरकत पानी बीमारों, परेशान ह़ालों, दुख्यारों और ग़म के मारों के जिस्मानी और रूह़ानी अमराज़ में बाइ़से शिफ़ा होगा । वाक़ेई जिस चीज़ को **अल्लाह** वालों के वुजूदे मसऊ़द (मुबारक जिस्म) से निस्बत ह़ासिल हो जाए उस के शरफ़ो अ़ज़मत को चार चांद लग जाते हैं बल्कि वोह शआ़इरुल्लाह (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां) बन जाती है, चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सफ़ा और मरवह वोह पहाड़ हैं जिन पर ह़ज़रते हाजरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पानी की तलाश में सात[7] बार चढ़ीं और उतरीं । उस **अल्लाह** वाली के क़दम पड़ जाने की बरकत से येह दोनों पहाड़ शआ़इरुल्लाह बन गए और ता क़ियामत ह़ाजियों पर उस पाक बीबी की नक़्ल उतारने में इन पर चढ़ना और उतरना सात[7] बार लाज़िम हो गया । बुज़ुर्गों के क़दम लग जाने से वोह चीज़ शआ़इरुल्लाह बन जाती है । (मज़ीद फ़रमाते हैं : तूरे सीना पहाड़ और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा इस लिये अ़ज़मत वाले बन गए कि तूर को कलीमुल्लाह (या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام) से और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को ह़बीबुल्लाह (या'नी हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से निस्बत हो गई । ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** के प्यारों की चीज़ें शआ़इरुल्लाह हैं जैसे क़ुरआन शरीफ़, ख़ानए का'बा, सफ़ा मरवह पहाड़, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा, बैतुल मुक़द्दस, तूरे सीना, मक़ाबिरे औलियाउल्लाह व अम्बियाए किराम (या'नी अम्बिया व औलियाए किराम के मज़ारात और) आबे ज़मज़म वग़ैरा । (इ़ल्मुल क़ुरआन, स. 48-50 मुलतक़त़न)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआने करीम में ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इस्मे गिरामी कई मक़ामात पर आया है और हर जगह आप की शानो अ़ज़मत का ज़िक्र मौजूद है । चुनान्चे, एक मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की सिफ़ात इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाई है : चुनान्चे, पारह 23 सूरतुस्साफ़्फ़ात की आयत नम्बर 102 में इरशादे बारी तआ़ला है :

www.dawateislami.net

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾ وَ كَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ ۪ وَ كَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿۵۵﴾

(پ۱۶، مریم، الآیۃ:۵۵-۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और किताब में इस्माईल को याद करो बेशक वोह वा'दे का सच्चा था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और अपने रब को पसन्द था।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुबारका में ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की चार[4] सिफ़ाते आ़लिय्या बयान हुई हैं (1) आप सादिकुल वा'द या'नी वा'दे के सच्चे (2) ग़ैब की ख़बरें देने वाले (3) अहलो इ़याल को नमाज़ व ज़कात का हुक्म देने वाले (4) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दे थे।

वा'दे के सच्चे !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह बात ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वा'दे के सच्चे हैं, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام इस वस्फ़ में ख़ास शोहरत रखते हैं। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बचपन में अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से किया हुवा वा'दा वक़्ते ज़ब्ह़ सब्रो रिज़ा के साथ ब ख़ूबी वफ़ा (पूरा) फ़रमाया। (تفسیر خازن، ۴/۲۲)

एक मरतबा आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक शख़्स से एक जगह मिलने का वा'दा किया और आप उस मक़ाम पर पहुंच भी गए, लेकिन जिस शख़्स ने आना था वोह भूल गया ह़त्ता कि शाम हो गई, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसी जगह सारी रात गुज़ार दी। सुब्ह़ जब वोह शख़्स आया तो आप को मौजूद पाया तो ह़ैरत ज़दा रह गया और अ़र्ज़ की : आप यहां से गए नहीं ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : नहीं तुम्हारे आने से पहले मैं कैसे चला जाता ?

(تفسیر طبری، ۴/۳۵۱)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कैसी उ़म्दा सिफ़त के मालिक थे कि आप नबी हो कर भी अपने एक उम्मती से किया हुवा वा'दा निभाने के लिये सारी रात उस मक़ाम पर ठहरे रहे। लिहाज़ा अगर कोई शरई मजबूरी न हो तो हमें भी इस प्यारी आ़दत को अपनाते हुवे किसी से किया हुवा वा'दा ज़रूर निभाना चाहिये। मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस कि आज हमारे मुआ़शरे में वा'दा ख़िलाफ़ी आ़म होती जा रही है और इस को मा'यूब भी नहीं समझा जाता, ह़ालांकि वा'दा ख़िलाफ़ी और अ़हद शिकनी ह़राम और गुनाहे कबीरा है, क्यूंकि वा'दा पूरा करना मुसलमान पर शरअ़न वाजिब व लाज़िम है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम में पारह 6 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 1 में इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ (پ6، المائدۃ:1)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अ़हद) पूरे करो।*

इसी त़रह़ पारह 15 सूरए बनी इस्राईल आयत नम्बर 34 में इरशाद होता है :

اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝۳۴

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अ़हद से सुवाल होना है।*

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो मुसलमान अ़हद शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी करे, उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।

(صحیح البخاری، کتاب الجزیۃ والموادعۃ، باب اثم من عاھد ثم غدر، الحدیث ۳۱۷۹، ج۲، ص ۳۷۰)

एक और ह़दीसे पाक में है कि लोग उस वक़्त तक हलाक न होंगे जब तक कि वोह अपने लोगों से अ़हद शिकनी न करेंगे। (سُنَنِ ابوداؤد، ج۴، ص۱۶۶، حدیث ۴۳۴۷)

वा'दा ख़िलाफ़ी किसे कहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने वा'दा ख़िलाफ़ी करने वाले के मुतअ़ल्लिक़ किस क़दर सख़्त वईदें हैं कि वा'दा ख़िलाफ़ी करने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत होती है, न तो उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल होता है और न ही नफ़्ल।

हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदुल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "वा'दा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की भी हो बल्कि वा'दा ख़िलाफ़ी येह है कि आदमी वा'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की न हो।" (الجامع لاخلاق الراوی للخطیب البغدادی، ص۳۱۵، رقم ۱۱۶۸)

एक और ह़दीसे पाक में है कि जब कोई शख़्स अपने भाई से वा'दा करे और उस की निय्यत पूरा करने की हो फिर पूरा न कर सके, वा'दे पर न आ सके तो उस पर गुनाह नहीं। (سُنَنِ ابوداؤد ج۴ ص۳۸۸ حدیث ۴۹۹۵)

ह़सद, वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबत व गाली
मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह
मेरे अख़्लाक़ अच्छे हों मेरे सब काम अच्छे हों
बना दो मुझ को तुम पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पाकीज़ा सिफ़ात जो क़ुरआने पाक में बयान हुई, उन में से एक येह भी है कि وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता। मा'लूम हुवा कि अपने अहलो इ़याल को नेक आ'माल की तरग़ीब दिलाना नमाज़ का आ़दी बनाना, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत है। लिहाज़ा हमें भी नमाज़ की अहम्मिय्यत को समझते हुवे न सिर्फ़ ख़ुद पांचों नमाज़ें पाबन्दी के साथ मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करनी चाहिये बल्कि अपने समझदार बच्चों को भी साथ ले कर जाना चाहिये। याद

www.dawateislami.net

रखिये ! अगर हम नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ अपने समझदार बच्चों को भी मस्जिद ले जाएंगे तो उन के नन्हे ज़ेह्न बचपन ही से नमाज़ों की त़रफ़ माइल होने लगेंगे क्यूंकि जो बात बच्चों के ज़ेह्न में बचपन ही से बैठ जाए फ़ित्री त़ौर पर बड़े हो कर भी वोह बात उन के ज़ेह्नो में रासिख़ (या'नी पुख़्ता) होती है। बच्चों को नमाज़ का आ़दी बनाने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन नमाज़ के फ़ज़ाइल भी सुनाते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से हमारे बच्चे छोटी सी उ़म्र में ही पक्के नमाज़ी बन जाएंगे। फ़ी ज़माना अवलाद की अच्छी तर्बिय्यत करना और इन्हें बचपन ही से नमाज़ रोज़े और जुम्ला इबादतों का आ़दी बनाना बहुत ज़रूरी है। अवलाद की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ सह़ीह़ तर्बिय्यत के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 188 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"तर्बिय्यते अवलाद"** का मुत़ालआ़ कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ अवलाद की बेहतरीन तर्बिय्यत करने में येह किताब मुआ़विन साबित होगी। याद रखिये ! अपनी अवलाद को किसी भी नेक काम की तरग़ीब देने से क़ब्ल ख़ुद उस काम के करने की आ़दत बनानी होगी ! वरना हमारी कही हुई बात असर अन्दाज़ न होगी और मत़लूबा नताइज का ह़ुसूल भी दुश्वार होगा। इस लिये अपनी अवलाद को नमाज़ वग़ैरा की तरग़ीब देने से क़ब्ल ख़ुद नमाज़ पढ़ने की पुख़्ता आ़दत बनानी होगी। क़ुरआनो ह़दीस में नमाज़ पढ़ने वालों के लिये बहुत सी बिशारतें और नमाज़ की बे शुमार फ़ज़ीलतें बयान की गई हैं, आइये इल्मे दीन ह़ासिल करने और नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेह्न बनाने के लिये फ़रमाने ख़ुदावन्दी सुनते हैं : पारह 6 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 12 में इरशाद होता है :

وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مَعَكُمْؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَیْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِیْ
وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* ***अल्लाह*** *ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हारे साथ हूं ज़रूर अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम*

www.dawateislami.net

حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ (پ6، المآئدۃ: 12)

करो और अल्लाह को क़र्ज़े ह़सन दो तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां।

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ियों के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कैसे कैसे इन्आ़मात हैं कि उन्हें जन्नत व मग़फ़िरत की बिशारतें दी जा रही हैं और अज्रे अ़ज़ीम की नवीदें (खुश ख़बरियां) भी सुनाई जा रही हैं। अह़ादीसे मुबारका में भी नमाज़ की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत और रग़बत दिलाई गई है, आइये तरग़ीब के लिये दो[2] फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

1. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पांच[5] नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, जो इन के लिये बेहतर त़रीक़े से वुज़ू करे और इन्हें इन के वक़्त में अदा करे और इन के रुकूअ़ व सुजूद, ख़ुशूअ़ के साथ पूरे करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे और जो उन्हें अदा नहीं करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे उस के लिये कुछ नहीं, चाहे तो उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे।

(سنن ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، باب المحافظۃ علی وقت الصلوات، رقم ۴۲۵، ج۱، ص۱۸۶)

2. अगर तुम्हारे किसी के सेह़न में नह्र हो, हर रोज़ वोह पांच[5] बार उस में ग़ुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ? लोगों ने अ़र्ज़ की : जी नहीं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नमाज़ गुनाहों को ऐसे ही धो देती है जैसा कि पानी मैल को धोता है।"

(سنن ابن ماجہ، ج۲، ص۱۶۵، حدیث۱۳۹۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने नमाज़ पढ़ने वाले किस क़दर ख़ुश नसीब हैं कि उन पर रह़मते इलाही की ऐसी बारिश होती है जो उन के गुनाहों को धो डालती है, नमाज़ की बरकत से साबिक़ा गुनाह तो मुआ़फ़ हो ही जाते हैं, आयिन्दा भी इन्सान गुनाहों और बे ह़याई के कामों से किनारा कशी इख़्तियार करने लगता है। नमाज़ की आ़दत बाक़ी रखने के लिये दा'वते

इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में हि़स्सा लीजिये, नीज़ अपनी मसाजिद महल्लों और घरों में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत को जारी कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुद की भी नमाज़ों की आ़दत बनी रहेगी और दूसरों को भी नेकी की दा'वत देने का अ़ज़ीम सवाब भी हाथ आएगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ माहे ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम अ़न क़रीब हमारे दरमियान जल्वागर होने वाला है और येह बहुत बा बरकत और रह़मतो वाला महीना है, लिहाज़ा जितना ज़ियादा हो सके इस महीने में इ़बादतो रियाज़त का एहतिमाम किया जाए और हो सके तो इस माह में नफ़्ली रोज़े भी रखने की सआ़दत ह़ासिल की जाए कि नफ़्ली रोज़ों के बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात हैं नीज़ अह़ादीसे मुबारका में ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम के पहले अ़शरे (या'नी इ़ब्तिदाई दस[10] दिन) के फ़ज़ाइल भी बयान हुवे हैं :

शबे क़द्र के बराबर फ़ज़ीलत

ह़दीसे पाक में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अ़शरए ज़ुल हि़ज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इ़बादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक[1] साल के रोज़ों और हर शब का क़ियाम शबे क़द्र के बराबर है।

(جامع ترمذی ج۲ص۱۹۲حدیث۷۵۸)

अ़रफ़ा का रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम) का रोज़ा एक[1] साल क़ब्ल और एक[1] साल बा'द के गुनाह मिटा देता है। (صحیح مُسلم ص۵۸۹،حدیث:۱۹۶)

www.dawateislami.net

एक रोज़ा हज़ार[1000] रोज़ों के बराबर

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम) का रोज़ा हज़ार रोज़ों के बराबर है। (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۵۷حدیث۳۷۶۴) मगर ह़ज करने वाले पर जो अ़रफ़ात में है उसे अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम) के दिन रोज़ा रखना मकरूह है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़रफ़ा के दिन (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) अ़रफ़ात में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया। (صحیح ابن خُزیمہ ج۳ص۲۹۲حدیث:۲۱۰۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि माहे ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम में रोज़े रखने के किस क़दर फ़ज़ाइलो बरकात हैं, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि इस माहे मुबारक में क़ुरबानी व दीगर इ़बादात के साथ साथ नफ़्ली रोज़े रखने की भी आ़दत बनाएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के सबब हमें बे शुमार रह़मतें और बरकतें ह़ासिल होंगी।

नमाज़ो रोज़ा व ह़ज्जो ज़कात की तौफ़ीक़
अ़त़ा हो उम्मते महबूब को सदा या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सीरते मुबारका के ह़वाले से बयान सुना कि

- आप عَلَیْہِ السَّلَام का मक़ामो मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक निहायत बुलन्दो बाला है।
- आप عَلَیْہِ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात को बजा लाने के लिये अपनी जान का नज़राना पेश करने के लिये भी हर दम तय्यार रहते थे।

www.dawateislami.net

❖ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़िन्दगी भर अपनी उम्मत को नेकी की दा'वत पेश करते रहे ।

❖ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर अ़मल करने में अपने वालिद साहिब के बहुत उ़म्दा मददगार साबित हुवे ।

❖ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का'बतुल्लाह शरीफ़ की ता'मीर करने वाले और बानिये मक्कए मुकर्रमा हैं ।

❖ आबे ज़मज़म का अ़ज़ीम मो'जिज़ा आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही के मुबारक क़दमों से निस्बत रखता है ।

❖ कुरआने पाक में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की 4 सिफ़ाते आ़लिय्या बयान हुई या'नी (1) आप सादिकुल वा'द या'नी वा'दे के सच्चे (2) ग़ैब की ख़बरें देने वाले (3) अहलो इ़याल को नमाज़ व ज़कात का हुक्म देने वाले (4) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दे थे ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी सोचना चाहिये कि हम अपने बुज़ुर्गाने दीन के किरदार को सामने रखते हुवे इस पर कितना अ़मल करते हैं ? हम से तो जान कुरबान करने का मुत़ालबा भी नहीं किया जा रहा, हम पर हमारी त़ाक़त से ज़ियादा बोझ भी नहीं डाला जा रहा, लेकिन फिर भी हम से आसान से आसान नेक आ'माल अदा नहीं हो पाते । ज़रा ग़ौर कीजिये अगर हम इसी ग़फ़्लत में दुन्या से चले गए तो क़ब्र में हमारा क्या बनेगा ? और ह़श्र में हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्या जवाब देंगे ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के सदक़े सब्रो शुक्र के साथ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने, अपने बच्चों की इस्लामी उसूलों की रोशनी में तर्बिय्यत करने और इस माह में नफ़्ली रोज़े रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मजलिसे मक्तबतुल मदीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के इस पुर फ़ितन दौर में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी रात दिन ख़िदमते दीन में मसरूफ़े अ़मल है और कमो बेश 97 शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, इन्ही शो'बाजात में से एक शो'बा मजलिसे मक्तबतुल मदीना भी है । याद रहे मौजूदा दौर में नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये जदीद ज़राएअ़ व वसाइल का इस्ति'माल बड़ी अहम्मिय्यत का ह़ामिल है ।

चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का आग़ाज़ सिने 1406 हिजरी ब मुत़ाबिक़ सिने 1986 में फ़रमाया और सब से पहले बयानात की ऑडियो केसिटें जारी की गई । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना ने इस मुख़्तसर अ़र्से में जो तरक़्क़ी की वोह अपनी मिसाल आप है क्यूंकि ऑडियो केसिटों से आग़ाज़ करने वाले मक्तबतुल मदीना के तह़्त आज बा क़ाइदा वी सी डी मक्तब और पाकिस्तान के शहर बाबुल मदीना (कराची) में एक अ़दद प्रिन्टिग प्रेस (Printing Press) काम कर रहा है, जो इस शो'बे से मुतअ़ल्लिक़ (Related) हर क़िस्म की जदीद सहूलिय्यात व ज़रूरिय्यात से आरास्ता है और इस मुख़्तसर अ़र्से में मक्तबतुल मदीना से जहां सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरात की हज़ारों केसिटें और VCD's दुन्या भर में पहुंची और पहुंच रही हैं, वहीं सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और दीगर उ़लमाए अहले सुन्नत की किताबें भी ज़ेरे त़बअ़ से आरास्ता हो कर लाखों लाख की ता'दाद में अ़वाम के हाथों में पहुंच कर सुन्नतों के फूल खिला रही हैं ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

www.dawateislami.net

12 मदनी कामों में हिस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी नेकी की दा'वत फेलाने में दा'वते इस्लामी का साथ देना चाहिये, अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और जैली हल्के के 12 मदनी कामों में खूब खूब हिस्सा लीजिये ! इन में से रोज़ाना का एक मदनी काम "मस्जिद दर्स" भी है । मन्कूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह़ी फ़रमाई : भलाई की बातें खुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह्शत न हो ।

(حِلیۃُ الاَولیاء ج۶، ص۵حدیث ۷۶۲۲)

बयान कर्दा रिवायत से मा'लूम हुवा कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही नियारे हैं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा । इस लिये दीगर मदनी कामों में हिस्सा लेने के साथ साथ खूब खूब मस्जिद दर्स देने की भी कोशिश कीजिये और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । आइये ! मदनी माहोल की बरकतों से माला माल एक मदनी बहार सुनते हैं, चुनान्चे,

मदनी बहार

मथुरा (हिन्द) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है, मैं एक मॉडर्न नौजवान था, फ़िल्में ड्रामे देखना मेरा मशग़ला था, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयान की केसीट "T.V की तबाह कारियां" सुनने का शरफ़ हासिल हुवा जिस ने मेरी काया पलट दी, मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से मुन्सलिक हो गया । मुझे APENDIX की बीमारी हो गई और डॉक्टर ने ऑप्रेशन का मश्वरा दिया । मैं घबरा गया, ऐसे में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में ज़िन्दगी में पहली बार

www.dawateislami.net

आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के तीन3 दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से बिग़ैर ऑप्रेशन के मेरा मरज़ जाता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए, अब हर माह तीन3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करता हूं, हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाता हूं और मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की ख़ा़तिर घूम फिर कर सदाए मदीना लगाता हूं। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 248)

बे अ़मल बा अ़मल बनते हैं सर बसर   तू भी ऐ भाई कर क़ाफ़िले में सफ़र
अच्छी सोह़बत से ठन्डा हो तेरा जिगर   काश ! कर ले अगर क़ाफ़िले में सफ़र

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْكاةُ الْمَصابِيح، ج ١ ص ٥٥ حديث ١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

इमामा शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मदनी फूल

आइये ! इमामा शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मदनी फूल सुनते हैं। ۞ इमामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बांधिये। (كَشْفُ الالْتِبَاس فِى اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس ص38)
۞ इमामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छे6 गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश गुम्बद नुमा हो। (फ़तावा रज़विय्या जि. 22 स. 186)
۞ रूमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह

इमामा ही हो गया और छोटा रूमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मकरूह है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा. जि. 7 स. 299) ۞ इमामे को जब अज़ सरे नौ बांधना हो तो जिस त़रह़ लपेटा है उसी त़रह़ खोले और यक बारगी ज़मीन पर न फेंक दे। (عالمگیری ج5ص330) ۞ अगर ज़रूरतन उतारा और दोबारा बांधने की निय्यत हुई तो एक एक पेच खोलने पर एक एक गुनाह मिटाया जाएगा। (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या, मुख़र्रजा जि. 6 स. 214) नंगे सर रहने वालों के बालों पर सर्दी गर्मी और धूप वग़ैरा बराहे रास्त असर अन्दाज़ होती है इस से न सिर्फ़ बाल बल्कि दिमाग़ और चेहरा भी मुतअस्सिर होता है और सिह़्ह़त को नुक़्सान पहुंच सकता है। लिहाज़ा इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत से इमामा शरीफ़ बांधने में दोनों जहां में आ़फ़िय्यत है।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''सुन्नतें और आदाब'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

(101 मदनी फूल स. 27)

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

﴾6﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ٢ ص ٣٢٩، حدیث ٣١)

﴾1﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ٢٥٤ حدیث ١٧٣٠٥)

﴾2﴿ हर रात इ़बादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ़ येह है **:**

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net